सूरदास

शब्द अर्थ :-

1. बड़भागी :- भाग्यवान
2. अपरस :- अलिप्त, नीरस, अछूता
3. तगा :- धागा, बंधन,
4. पुरइनि पात :- कमल का पत्ता
5. दागी :- दाग, धब्बा
6. माहँ :- में
7. प्रीति नदी :- प्रेम की नदी
8. पाउँ :- पैर
9. बोर्यौ :- डुबोया
10. परागी :-
11. गुर चाँटी ज्यौं पागी :- जिस प्रकार चींटी गुड़ मे लिपटती है, उसी प्रकार हम भी कृष्ण प्रेम में अनुरक्त है।
12. अधार :- आधार
13. आवन :- आगमन
14. बिथा :- व्यथा
15. बिरहिनि :- बियोग में जीने वाली
16. बिरह दही :- विरह की आग में जल रही है।
17. हुती :- थीं
18. गुहारि :- रक्षा के लिए पुकारना
19. उत :- उधर, वहाँ
20. धार :- योग की प्रबल धारा
21. धीर :- धैर्य
22. मरजादा :- मर्यादा प्रतिष्ठा
23. न लही :- नहीं रही, नहीं रखी।
24. जितहिं तैं :- जहां से
25. हारिल :- हारिल एक पक्षी है जो अपने पैरों में सदैव एक लकड़ी लिए रहता है, उसे छोड़ता नहीं है।
26. नंद-नंदन उर... पकरी - नंद के नंदन कृष्ण को हमने भी अपने

हृदय में बसाकर कसकर पकड़ा हुआ हैं।
27. जक री - रटती रहती हैं,
28. सु :- वह
29. ब्याधि :- रोग, पीड़ा
30. करी :- भोगा
31. तिनहीं :- उनको
32. मन चकरी :- जिनका मन स्थिर नहीं रहता,
33. मधुकर :- भौंरा, उद्धव के लिए गोपियों द्वारा प्रयुक्त संबोधन
34. हुते :- थे
35. पठाए :- भेजा,
36. आगे के :- पहले के,
37. पर हित :- दूसरों के कल्याण के लिए,
38. डोलत धाए :- घूमते-फिरते थे,
39. फेर :- फिर से,
40. पाइहैं :- पा लेंगी
41. अनीति :- अन्याय

IV. पाठ्य-पुस्तक के प्रश्न-अभ्यास

(पृष्ठ 7)

प्रश्न 1. गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है? *[CBSE]*

अथवा

गोपियों ने उद्धव को भाग्यशाली क्यों कहा है? क्या वे वास्तव में भाग्यशाली हैं? *[CBSE 2012]*

उत्तर–गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में वक्रोक्ति है। वे दीखने में प्रशंसा कर रही हैं किंतु वास्तव में कहना चाह रही हैं कि तुम बड़े अभागे हो कि प्रेम का अनुभव नहीं कर सके। न किसी के हो सके, न किसी को अपना बना सके। तुमने प्रेम का आनंद जाना ही नहीं। यह तुम्हारा दुर्भाग्य है।

प्रश्न 2. उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है? *[CBSE 2015]*

उत्तर–उद्धव के व्यवहार की तुलना निम्नलिखित से की गई है–

1. कमल के पत्तों से, जो जल में रहकर भी उससे प्रभावित नहीं होते।
2. जल में पड़ी तेल की बूँद से, जो जल में घुलती-मिलती नहीं।

उद्धव भी इनके समान हैं। वे कृष्ण के संग रहकर भी उसके प्रेम से प्रभावित नहीं हो सके।

प्रश्न 3. गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं? **[Imp.]** *[CBSE]*

उत्तर–गोपियों ने निम्नलिखित उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं–

1. उन्होंने कहा कि उनकी प्रेम-भावना उनके मन में ही रह गई है। वे न तो कृष्ण से अपनी बात कह पाती हैं, न अन्य किसी से।

2. वे कृष्ण के आने की इंतज़ार में ही जी रही थीं, किंतु कृष्ण ने स्वयं न आकर योग-संदेश भिजवा दिया। इससे उनकी विरह-व्यथा और अधिक बढ़ गई है।

3. वे कृष्ण से रक्षा की गुहार लगाना चाह रही थीं, वहाँ से प्रेम का संदेश चाह रही थीं। परंतु वहीं से योग-संदेश की धारा को आया देखकर उनका दिल टूट गया।

4. वे कृष्ण से अपेक्षा करती थीं कि वे उनके प्रेम की मर्यादा को रखेंगे। वे उनके प्रेम का बदला प्रेम से देंगे। किंतु उन्होंने योग-संदेश भेजकर प्रेम की मर्यादा ही तोड़ डाली।

प्रश्न 4. उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम कैसे किया? [*CBSE*]

उत्तर–ब्रज की गोपियाँ इस प्रतीक्षा में बैठी थीं कि देर-सवेर कृष्ण उनसे मिलने अवश्य आएँगे, या अपना प्रेम-संदेश भेजेंगे। इसी से वे तृप्त हो जाएँगी। इसी आशा के बल पर वे वियोग की वेदना सह रही थीं। परंतु ज्यों ही उनके पास कृष्ण द्वारा भेजा गया योग-संदेश पहुँचा, वे तड़प उठीं। उनकी विरह-ज्वाला तीव्रता से भड़क उठी। उन्हें लगा कि अब कृष्ण उनके पास नहीं आएँगे। वे योग-संदेश में ही भटकाकर उनसे अपना पीछा छुड़ा लेंगे। इस भय से उनकी विरहाग्नि भड़क उठी।

प्रश्न 5. *'मरजादा न लही'* के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है? [*CBSE 2012*]

उत्तर–प्रेम की यही मर्यादा है कि प्रेमी और प्रेमिका दोनों प्रेम को निभाएँ। वे प्रेम की सच्ची भावना को समझें और उसकी मर्यादा की रक्षा करें। परंतु कृष्ण ने गोपियों से प्रेम निभाने की बजाय उनके लिए नीरस योग-संदेश भेज दिया, जो कि एक छलावा था, भटकाव था। इसी छल को गोपियों ने मर्यादा का उल्लंघन कहा है।

☞प्रश्न 6. कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?

[Imp.] [*CBSE 2015, 2017*]

उत्तर–गोपियों ने कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को निम्नलिखित युक्तियों से व्यक्त किया है–

- वे स्वयं को कृष्ण रूपी गुड़ पर लिपटी हुई चींटी कहती हैं।
- वे स्वयं को हारिल पक्षी के समान कहती हैं जिसने कृष्ण-प्रेम रूपी लकड़ी को दृढ़ता से थामा हुआ है।
- वे मन, वचन और कर्म से कृष्ण को मन में धारण किए हुए हैं।
- वे जागते-सोते, दिन-रात और यहाँ तक कि सपने में भी कृष्ण का नाम रटती रहती हैं।
- वे कृष्ण से दूर ले जाने वाले योग-संदेश को सुनते ही व्यथित हो उठती हैं।

प्रश्न 7. गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है? [*CBSE*]

उत्तर–गोपियों ने उद्धव को कहा है कि वे योग की शिक्षा ऐसे लोगों को दें जिनके मन स्थिर नहीं हैं। जिनके हृदयों में कृष्ण के प्रति सच्चा प्रेम नहीं है। जिनके मन में भटकाव है, दुविधा है, भ्रम है और चक्कर हैं।

☞प्रश्न 8. प्रस्तुत पदों के आधार पर गोपियों का योग-साधना के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट करें।

[Imp.] [*CBSE*]

उत्तर–सूरदास के पठित पदों के आधार पर स्पष्ट है कि गोपियाँ योग-साधना को नीरस, व्यर्थ और अवांछित मानती हैं। उनके अनुसार योग-साधना प्रेम का स्थान नहीं ले सकती। प्रेमीजन योग-मार्ग द्वारा नहीं, प्रेमपूर्ण समर्पण के बल पर ही ईश्वर को पा सकते हैं। उनके अनुसार, योग-साधना तो उनके प्रेम की दीवानगी में बाधा है। यह उन्हें उनके कृष्ण से दूर ले जाती है। इसीलिए योग का नाम सुनते ही उनकी विरह-ज्वाला और अधिक भड़क उठती है। उन्हें योग-साधना एक बला प्रतीत होती है। उन्हीं के शब्दों में–

सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।

गोपियाँ प्रेम के बदले योग-संदेश भेजने को कृष्ण की मूर्खता या चालाकी मानती हैं। कभी वे कृष्ण को बुद्धू बनाती हुई कहती हैं–**'बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग-सँदेस पठाए।'** कभी वे आरोप लगाती हुई कहती हैं–**'हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।'**

प्रश्न 9. गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए? [*CBSE 2012, 2015, 2017*]

उत्तर–गोपियों के अनुसार, राजा का धर्म यह होना चाहिए कि वह प्रजा को अन्याय से बचाए। उन्हें सताए जाने से रोके।

प्रश्न 10. गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन-से परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं? [*CBSE*]

उत्तर–गोपियों को लगा कि कृष्ण मथुरा में जाकर बदल गए हैं। वे अब गोपियों से प्रेम नहीं करते। इसलिए वे स्वयं उनसे मिलने नहीं आए। दूसरे, उन्हें लगा कि अब कृष्ण राजा बनकर राजनीतिक चालें चलने लगे हैं। छल-कपट उनके स्वभाव का अंग हो गया है। इसलिए वे वहाँ से अपना प्रेम-संदेश भेजने की बजाय योग-संदेश भेज रहे हैं।

इन परिवर्तनों को देखते हुए गोपियों को लगा कि अब उनका कृष्ण-प्रेम में डूबा हुआ मन वापस उन्हें मिल पाएगा।

प्रश्न 11. गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया, उनके वाक्चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए। **[V. Imp.]**

उत्तर–गोपियाँ वाक्चतुर हैं। वे बात बनाने में किसी को भी पछाड़ देती हैं। यहाँ तक कि ज्ञानी उद्धव उनके सामने गूँगे होकर खड़े रह जाते हैं। कारण यह है कि गोपियों के हृदय में कृष्ण-प्रेम का सच्चा ज्वार है। यही उमड़ाव, यही जबरदस्त आवेग उद्धव की बोलती बंद कर देता है। सच्चे प्रेम में इतनी शक्ति है कि बड़े-से-बड़ा ज्ञानी भी उसके सामने घुटने टेक देता है।

प्रश्न 12. संकलित पदों को ध्यान में रखते हुए सूर के भ्रमरगीत की मुख्य विशेषताएँ बताइए। *[CBSE 2015]*

उत्तर–सूरदास के भ्रमरगीत की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

- इनमें गोपियों का निर्मल कृष्ण-प्रेम प्रकट हुआ है। वे कृष्ण की दीवानी हैं। उनका प्रेम अनन्य है, संपूर्ण है और अनूठा है।
- गोपियाँ गाँव की चंचल, अल्हड़ और वाक्चतुर बालाएँ हैं। वे चुपचाप आँसू बहाने वाली नहीं अपितु अपने भोले-निश्छल तर्कों से सामने वाले को परास्त करने की क्षमता रखती हैं।
- भ्रमरगीत में व्यंग्य, कटाक्ष, उलाहना, निराशा, प्रार्थना, गुहार आदि अनेक-अनेक मनोभाव तीखे तेवरों के साथ प्रकट हुए हैं।
- इसमें योग और प्रेम मार्ग का द्वंद्व दिखाया गया है। प्रेम के सम्मुख योग-साधना को तुच्छ दिखलाया गया है।
- इसमें कृष्ण के ज्ञानी मित्र उद्धव को निरुत्तर, मौन और भौंचक्का-सा दिखाया गया है।
- ये पद संगीत की दृष्टि से बहुत मनोहारी हैं। हर पद पहले गाया गया है, फिर लिखा गया है। ये शास्त्रीय रागों पर आधारित हैं।
- इनमें ब्रजभाषा की कोमलता, मधुरता और सरसता के दर्शन होते हैं। शृंगार रस के अनुरूप शब्द कोमल बन पड़े हैं।
- इनकी भाषा अलंकार-युक्त है। जो भी अलंकार आए हैं, वे सहज जनजीवन से आए हैं। उनका प्रयोग स्वाभाविक है। कहीं-कहीं अलंकार न के बराबर हैं तो भी सरसता में कोई कमी नहीं आई है। ऐसे अलंकारहीन पदों में सूरदास की रसमयी भावना ही आकर्षण का कारण है।
- इन पदों में कृष्ण परदे के पीछे रहते हैं। गोपियाँ ऊधौ के सामने खुलकर अपना उलाहना प्रकट करती हैं।

रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 13. *गोपियों ने उद्धव के सामने तरह-तरह के तर्क दिए हैं,* **आप अपनी कल्पना से और तर्क दीजिए।**

उत्तर–**गोपियाँ**–ऊधौ! यदि यह योग-संदेश इतना ही प्रभावशाली है तो कृष्ण इसे कुब्जा को क्यों नहीं देते? तुम यों करो, यह योग कुब्जा को जाकर दो।

और बताओ! जिसकी जुबान पर मीठी खाँड का स्वाद चढ़ गया हो, वह योग रूपी निबौरी क्यों खाएगा? फिर यह भी तो सोचो कि योग-मार्ग कठिन है। इसमें कठिन साधना करनी पड़ती है। हम गोपियाँ कोमल शरीर वाली और मधुर मन वाली हैं। हमसे यह कठोर साधना कैसे हो पाएगी। हमारे लिए यह मार्ग असंभव है।

प्रश्न 14. *उद्धव ज्ञानी थे, नीति की बातें जानते थे;* **गोपियों के पास ऐसी कौन-सी शक्ति थी जो उनके वाक्चातुर्य में मुखरित हो उठी?**

उत्तर–गोपियाँ वाक्चतुर हैं। वे बात बनाने में किसी को भी पछाड़ देती हैं। यहाँ तक कि ज्ञानी उद्धव उनके सामने गूँगे होकर खड़े रह जाते हैं। कारण यह है कि गोपियों के हृदय में कृष्ण-प्रेम का सच्चा ज्वार है। यही उमड़ाव, यही जबरदस्त आवेग उद्धव की बोलती बंद कर देता है। सच्चे प्रेम में इतनी शक्ति है कि बड़े-से-बड़ा ज्ञानी भी उसके सामने घुटने टेक देता है।

प्रश्न 15. गोपियों ने यह क्यों कहा कि हरि अब राजनीति पढ़ आए हैं? क्या आपको गोपियों के इस कथन का विस्तार समकालीन राजनीति में नज़र आता है, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–जब गोपियों ने देखा कि जिस कृष्ण की वे बहुत समय से प्रतीक्षा कर रही थीं, वे नहीं आए। उसकी जगह कृष्ण से दूर ले जाने वाला योग-संदेश आ गया तो उन्हें इसमें कृष्ण की एक चाल नज़र आई। वे इसे अपने साथ छल समझने लगीं। इसीलिए उन्होंने आरोप लगाया कि–

हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।

आज की राजनीति तो सिर से पैर तक छल-कपट से भरी हुई है। किसी को किसी भी राजनेता के वायदों पर विश्वास नहीं रह गया है। नेता बातों से नदियाँ, पुल, सड़कें और न जाने क्या-क्या बनाते हैं किंतु जनता लुटी-पिटी-सी नज़र आती है। आज़ादी के बाद से गरीबी हटाओ का नारा लग रहा है किंतु तब से लेकर आज तक गरीबों की कुल संख्या में वृद्धि ही हुई है। इसलिए गोपियों का यह कथन समकालीन राजनीति पर खरा उतरता है।

पाठेतर सक्रियता

- *प्रस्तुत पदों की सबसे बड़ी विशेषता है गोपियों की 'वाग्विदग्धता'। आपने ऐसे और चरित्रों के बारे में पढ़ा या सुना होगा जिन्होंने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई; जैसे–बीरबल, तेनालीराम, गोपालभाँड, मुल्ला नसीरुद्दीन आदि।* **अपने किसी मनपसंद चरित्र के कुछ किस्से संकलित कर एक अलबम तैयार करें।**

उत्तर–परीक्षोपयोगी नहीं।

- **सूर रचित अपने प्रिय पदों को लय व ताल के साथ गाएँ।**

उत्तर–परीक्षोपयोगी नहीं।

V. अन्य महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर

Imp

☞प्रश्न 1. *'ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी'* में किन लोगों पर व्यंग्य है? सूरदास इसके माध्यम से क्या कहना चाहते हैं? **[Imp.]**

उत्तर–इस काव्यांश में कृष्ण के प्रेम से वंचित लोगों पर व्यंग्य है। जिन लोगों ने भगवान से कभी प्रेम नहीं किया, उनका जीवन व्यर्थ है। वे जीवन के सबसे मूल्यवान अनुभव से वंचित रहे हैं। वे अभागे हैं। प्रभु-प्रेम में चाहे कितनी भी तड़प और साधना हो, किंतु जीवन को सार्थकता उसी से मिलती है।

☞प्रश्न 2. *'सूरदास अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी'* में गोपियों की कौन-सी मनोदशा प्रकट हुई है? **[Imp.]**

उत्तर–इस काव्य-पंक्ति में गोपियों की प्रेम-निष्ठा प्रकट हुई है। वे स्वभाव से भोली हैं। वे प्रेम में 'हानि-लाभ' या 'खोए-पाए' की परवाह नहीं करतीं। वे तो सच्चे मन से कृष्ण के प्रेम में लिप्त हो गई हैं। मन-ही-मन उन्हें अपनी इस लीनता पर गर्व भी है।

प्रश्न 3. गोपियों के अनुसार प्रीति की नदी में किसने पैर नहीं रखा है और उन्हें उसकी दृष्टि में क्या अभाव दिखाई दे रहा है? *[CBSE 2014]*

उत्तर–गोपियों के अनुसार उद्धव ने कभी प्रीति की नदी में पैर नहीं रखा। उनके अनुसार, प्रेम के अभाव में उद्धव का जीवन व्यर्थ है। वह अभागा है।

प्रश्न 4. गोपियों के लिए हारिल पक्षी के पैरों की लकड़ी के समान कौन अभिन्न है? गोपियों ने मन, वचन और कर्म से किसे मजबूती से पकड़ रखा है? *[CBSE 2014]*

उत्तर–गोपियों के लिए कृष्ण हारिल पक्षी के पैरों की लकड़ी के समान प्रिय हैं। उन्होंने अपने मन, कर्म और वचन से उन्हें अपने मन में धारण किया हुआ है।

प्रश्न 5. उद्धव गोपियों के लिए कौन-सा रोग लेकर आ गए जैसा न तो उन्होंने सुना, न देखा या अनुभव ही किया। [CBSE 2014]

उत्तर–उद्धव गोपियों के लिए योग संदेश नाम का नया रोग ले आए हैं जिसके बारे में उन्होंने न तो पहले कभी सुना था, न जाना था और न ही अनुभव किया था।

प्रश्न 6. *'जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जकरी।'* इस पंक्ति द्वारा गोपियों की किस मनःस्थिति का वर्णन किया गया है? [CBSE 2014]

उत्तर–इस पंक्ति द्वारा गोपियों की प्रेममग्न दशा का वर्णन किया गया है। वे पूरी तरह कृष्ण के प्रेम में पागल हो गई हैं।

प्रश्न 7. गोपियों को योग की बात किसके समान लगती है और क्यों? 'पद' के आधार पर लिखिए। [CBSE 2015]

उत्तर–गोपियों को योग की बात कड़वी ककड़ी के समान कटु लगती है।

क्यों–वे कृष्ण से प्रेम चाहती हैं, योग सुनना नहीं चाहती।

प्रश्न 8. गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है? [CBSE 2015]

उत्तर–गोपियों ने उद्धव को सुझाव दिया है कि वह योग की शिक्षा उन लोगों को दे जिनके मन में कोई दुविधा हो।

प्रश्न 9. *"ते क्यौं अनीति करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए"* पंक्ति का भाव स्पष्ट करते हुए बताइए कि यह पंक्ति किसके अनीति करने पर कही गई है और क्यों? [CBSE 2015]

उत्तर–इसमें गोपियाँ कृष्ण को उलाहना दे रही हैं। वे कहती हैं–कृष्ण ने तो स्वयं ब्रज के लोगों को अन्याय से छुटकारा दिलाया है। तो वे स्वयं हमसे दूर होकर हम पर अन्याय क्यों कर रहे हैं। यहाँ कृष्ण के दूर चले जाने को अन्याय कहा गया है।

क्यों–वे कृष्ण से अत्यधिक प्रेम करती थीं।

प्रश्न 10. गोपियों ने योग की शिक्षा को किस-किस के समान बताया है और क्यों? [CBSE 2012]

उत्तर–गोपियों ने योग की शिक्षा को कभी 'कड़वी ककड़ी' के समान बताया है तो कभी किसी बीमारी के समान। कभी उन्होंने उसे चक्कर में डाल देने वाली 'चक्री' के समान बताया है।

क्यों–कारण यह है कि वे कृष्ण की दीवानी हैं। वे हर हाल में कृष्ण का प्रेम पाना चाहती हैं।

प्रश्न 11. *'हारिल की लकड़ी'* का क्या तात्पर्य है? गोपियों ने कृष्ण को *'हारिल की लकड़ी'* क्यों कहा है? [CBSE 2017]

उत्तर–हारिल की लकड़ी का तात्पर्य है–जीवन का आधार। गोपियाँ कृष्ण से अथाह प्रेम करती हैं। वे उन्हें अपने जीवन का आधार मानती हैं। इसलिए वे कृष्ण को 'हारिल की लकड़ी' कहती हैं।

प्रश्न 12. उद्धव गोपियों को कौन-सी शिक्षा देना चाहते हैं और गोपियाँ उसे किन लोगों को देने के लिए कहती हैं? [CBSE 2017]

उत्तर–उद्धव गोपियों को योग की शिक्षा देना चाहते हैं। गोपियाँ उसे उन लोगों को दे आने के लिए कहती हैं जिनके मन में दुविधा है, चकरी है, भ्रम है।

प्रश्न 13. गोपियाँ कृष्ण से क्यों नाराज़ थीं? [CBSE 2017]

उत्तर–गोपियाँ कृष्ण से इसलिए नाराज़ थीं क्योंकि कृष्ण ने गोपियों को बहुत प्रतीक्षा कराई। जब आने का समय आया तो वे स्वयं न आकर अपने मित्र उद्धव को भेज दिया जिसने उन्हें कृष्ण की बातें करने की बजाय योग संदेश की बातें करना आरंभ कर दीं।